प्र०(5) "जैसे कछुआ अपने अंगों को अंदर खींचता है, बुद्धिमान व्यक्ति अपनी इच्छानुसार अपनी इन्द्रियों को आकर्षित कर सकता है" - तिरुक्कुरल। वर्तमान परिदृश्य में आप इस कथन से क्या समझते है? स्पष्ट कीजिए।

उ०: महान तमिल कवि तिरुक्कुरल का यह कथन हमें आत्मसंयम, आत्मनियंत्रण व स्वाजागरूकता के महत्व का बोध कराता है। महात्मा बुद्ध से लेकर 'महावीर' की नैतिक शिक्षाओं और 'महात्मा गाँधी' के न्यायसिता के सिद्धांत से लेकर 'जे.एस.लास्की' के नैतिक पर्याप्तता का का सिद्धांत। तिरुपुरूम के इसी कथन की पुष्टि करता है।

महत्व

1. संसाधनों के नैतिक * उपयोग के लिए आवश्यक।
(e.g.) धारणीय विकास तथा SDG-12 (जिम्मेदारी पूर्ण उत्पादन व उपभोग की अवधारणा)

2. नए विचारों के प्रतिपादन में * सहायक।
(e.g.) बिल गेट्स के द्वारा * रचनात्मक पूँजीवाद की अवधारणा का प्रतिपादन।

3. सामाजिक-आर्थिक न्याय सुनिश्चित करने की आवश्यकता।
(e.g.) भारत के शीर्ष 1% आबादी के पास 40% संसाधन जबकि नीचे के 50% के पास 3% संसाधन

IAS Mentorship
By Reyasat Ali Sir & Team | 9580393900 Call Telegram WhatsApp

4. आत्म संयम से जनकल्याण की भावना।

(e.g.) सहकार से समृद्धि की अवधारणा।

यद्यपि कई बार इसके विपरीत परिणाम भी देखने को मिल सकते हैं। (यथा)

→ बौद्धिक विमर्श तथा नैतिक चर्चा के स्तर में गिरावट।

(e.g.) →

→ आत्मकेंद्रित समाज के विकास को प्रोत्साहन।

→ उत्पादों के मांग में कमी से आर्थिक-चक्र कमजोर होने की संभावना।

जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा है कि हमारे पास लोगों का पेट भरने के लिए बहुत कुछ है, किन्तु पेटी भरने के लिए कुछ भी नहीं। ऐसे में यह आवश्यक है कि हम स्वयं के इंद्रियों पर इसी तरह से नियंत्रण रखें जिस तरह से कछुआ अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण करता है।

8090528260 Call Telegram WhatsApp Text